Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

UGC Approved Monthly Journal

VOL-IV ISSUE-XI Nov. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

मीरा की कृष्ण-भक्ति के बहाने स्त्री-विमर्श

डॉ.बालाजी श्रीपती भुरे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृती वरिष्ठ महाविद्यालय,
नलेगाँव ता.चाकुर जि.लातूर।

राजस्थान के दो शक्तिशाली राजघराणों से (जन्म से मेड़ता और विवाह के द्वारा मेवाड़) संबंधित होत हुए भी मीरा के व्यक्तित्व और चरित्र के प्रभाव को तत्कालीन समाज ग्रहण न कर सका। जिस राजपरिवार से उसका विवाह हो गया वह मीरा को हमेशा अपने कुल का एक कलंक ही मानता रहा क्योंकि मीरा का कुलमर्यादा को त्यागकर साधुओं की मंडली में जाना उन्हें रास नहीं था।

परन्तु मीरा की कृष्ण के प्रति भक्ति, निष्ठा, दृढ़ता और प्रभु प्रेम में समर्पित उसके जीवन ने समय के पथ पर और मनुष्य के मन-मस्तिष्क पर एक अमिट छाप लगाई है, जिसे समय भी नहीं मिटा सका। साढ़े चार सौ से अधिक वर्षों के बाद भी मीरा भारतीय संस्कृति और साहित्य के आकाश में एक उज्ज्वल नक्षत्र के समान जगमगा रही है।

मीरा का विवाह मेवाड़ के राजा राणा सांगा के पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ। अपने पितामह राव दूदाजी की भक्ति से प्रेरित मीरा ने बचपन में ही खुदको कृष्ण के प्रति समर्पित किया था। वह कृष्ण को ही अपना पति मान चुकी थी -

"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरों न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।।"

अत: उसका मन न अपने ससुराल में लगा न अपने पति भोजराज में। वह हमेशा कृष्ण भक्ति में डूबी रही। गुरू रविदास के ज्ञान ने मीरा की भक्ति को और भी अधिक प्रज्ज्वलित किया। ससुरालवालों को यह सब खटक रहा था। उनके द्वारा मीरा को कई प्रकार की यातनाएँ दी गई लेकिन मीरा अपनी कृष्ण भक्ति में अडिग रहीं। परिणाम स्वरूप पति की मृत्यु के बाद उसे घरछोड़ना पड़ा।

मीरा न तो अब राजवधू थी और न ही चित्तौड़ को अपना घर मानती थी। जिस जंजीर ने उसे मेवाड़ के राजघराने से बांध रखा था उसे वह कब की तोड़ चुकी थी। वह अपने भाग्यपर सन्तुष्ट थी और उसका मन अपने प्रियतम के चरणों में लगा हुआ था। कृष्ण के प्रति अटूट भक्ति ने मीरा को उस अवस्था पर पहुँचा दिया था, जिसमें स्तुति और निन्दा, यश और अपयश उसके लिए समान थे। निर्विकार और अनासक्त होने के साथ-साथ उसके उदार हृदय में धर्म, जाति, आयु आदि के परे सबके प्रति प्रेम की भावना थी।

समाज की दृष्टि से देखा जाए तो मीरा का समय उस अंधकारमय युग का है, जिस समय समाज में बालविवाह, बहुविवाह, सतीप्रथा, जातिप्रथा का प्रचलन था। इन कुप्रथाओं में स्त्रियों की स्थिति निरीह, बेबस और लाचार सी बनी थी। कभी पिता, कभी भाई तो कभी पति या ससुरालवालों के अधिकरों तले वह पिसती रही। ऐसे अंधकारमय युग में मीरा की भक्ति एवं उसकी प्रखर वाणी ने तत्कालीन स्त्रियों के जीवन में ज्योति प्रज्ज्वलित करने का कार्य किया है। कृष्ण के प्रति अपनी अटूट भक्ति के साथ-साथ मीराबाई ने तत्कालीन समाज में प्रचलित जातिप्रथा, रूढ़ी-परम्परा, परदा प्रथा, बहुविवाह प्रथा एवं सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं का भी विरोध किया है। इसे उनके पदों के आधार पर यहाँ विश्लेषित किया जा रहा है। जैसे -

समानाधिकार :-

तत्कालीन समाज में प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों का ही अधिकार चलता था। भक्ति के क्षेत्र में तो स्त्रियों को प्रवेश तक नहीं था। स्त्रियों को संतों की संगति में रहकर भजन-कीर्तन कर नाच-गाने की बात तो दूर घर के चौखट को लाँघकर बाहर जाने तक की अनुमति नहीं थी। पहली बार मीरा ने इस परम्परा को खंडित किया। वह कृष्ण की भक्ति में मग्न होकर संतों की संगति में नाचने गाने लगी। मीरा ने अपनी कृष्ण भक्ति से यह साबित किया कि कोई भी स्त्री अपने सामुहिक जीवन में पुरूषों की तरह भजन कर सकती है। यह कहकर कि -

"छांड़ दई कुल की कान क्या करिहै कोई।
संतन ढिंग बैठि बैठि लोक लाज खोई।।
चुनरी के लिए टूक टूक ओढ़ लीन्ह लोई।
मोती मूंगे उतार बन माला पोई।।
आई मैं भक्ति काज जगत देख मोही।
दासी मीरा गिरधर प्रभु तारो अब मोही।।"[१]

मीरा ने भारतीय स्त्रियों के लिए भक्ति के दरवाजे हमेशा के लिए खोल दिए। भक्ति के क्षेत्र में मीरा द्वारा की गई यह एक क्रांति ही है।

रूढ़ियों का विरोध :-

क्षत्रियों की वीरता और क्षत्राणियों के त्यागमय जीवन ने वैसे मेवाड़ के इतिहास को उत्साह और गर्व से तो भर दिया लेकिन स्त्रियों की निरीहता की व्यथा-कथा को भी बरकरार रखा। समाज में या धर्म के क्षेत्र में कई रूढ़ियों का प्रचलन था। इन रूढ़ियों के खिलाफ स्त्री-विद्रोह का प्रथम झण्डा उठाने वाली मीरा ने तीर्थ, व्रत, गंगास्नान, योग, वैराग्य आदि को अर्थहीन बताया है। उनके अनुसार मनुष्य को अपने अनमोल जीवन को इस प्रकार की बाहरमुखी क्रियाओं में नष्ट नहीं करना चाहिए। इस बात को लेकर वह कहती है -

"भज मन चरन कंवल अबिनासी।
जेताइ दीसे धरनि गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी।।
इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड्यां उठि जासी।।
कहा भयो है भगवा पहरयाँ, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होय जुगति नहिं जानी, उलटि जनम फिर आसी।।"[२]

जाति-पांति का विरोध :-

अन्य सन्तों की तरह मीराबाई ने भी कृष्णभक्ति के लिए गुरू के ज्ञान को तथा साधु-संगति को महत्त्वपूर्ण बताया है। इसके लिए उसने गुरू या साधु की जाति को नहीं देखा। मीरा ने स्वयं राजघराने से संबंधित होने के बावजूद चमार जाति के संत रविदास को अपना गुरू मान लिया, जो अपनी आजीविका के लिए मोची का काम करते थे। अपने पिता और पति के परिवारों के उज्जल नाम को कलंकित करने के आरोपों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा है कि न तो मैं पीहर की हूँ न ही ससुराल की। मुझे तो संत रविदास जैसे गुरू मिलें जिससे मेरा जीवन कृष्ण-भक्ति से उज्ज्वल हो गया। मीरा ने कहा है -

"मेरो मन लागो हरि जी सूँ, अब न रहूंगी अटकी।
गुरू मिलिया रविदास जी, दीन्हीं ज्ञान की गुटकी।।"[३]

इतना ही नहीं राणा सांगा के यह कहने से कि तुम अपनी कुल मर्यादा को त्याग कर कहीं भी, किसी भी भंडारे में क्यों जाती हो और वहाँ साधुओं के बीच क्यों गाती-नाचती हो, तब मीरा का यह कहना कि,

"राणाजी हो, जाति रो कारण म्हारे को नहीं,

लागो म्हारो हरि भगतां सूं हेत।।"[४]

यह जाति-पांति के भेदभाव का विरोध दर्शाता है। उसके लिए तो सब एक समान हैं। जाति-पांति, कुल से उसे कोई लेना-देना नहीं है। वह तो केवल प्रभु के भक्तों की आराधना करती है।

स्वाधिकार की भावना :-

तत्कालीन समाज में जहाँ स्त्री पुरूषों की गुलाम थी, वहाँ वह अपने अधिकार की बाते कैसे करेगी। ऐसी निरीह और अबला मानी गई स्त्रियों में स्वाधीनता एवं स्वाधिकार की चेतना जगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य मीराबाई ने किया है। लोक लाज की परवाह किए बिना स्वयं अपने प्रेम में अधिकार के साथ जीने के लिए मीरा संघर्ष करती रही। वह कृष्ण को अपने पति के रूप में पहले से ही मान चुकी थी। अत: वह अपने ससुरालवालों के सामने यहाँ तक कि अपने पति के सामने स्पष्ट रूप से कह देती है कि,

"मेरे तो गिरधर गोपाल,
दूसरा न कोई।।
जाके सिर मोर मुकुट,
मेरो पति सोई।।"[५]

इससे मीरांबाई की स्वाधिकार एवं स्वाधीनता की चेतना यहाँ अभिव्यक्त हुई दिखाई देती है।

वैभव की उपेक्षा :-

तत्कालीन समाज में राजा-महाराजा तो वैभव का जीवन जीते थे, सामान्य जनता भी वैभव सुख को पाना चाहती थी। ऐसा कौन है, जो सुख-सुविधाओं की जिन्दगी जीना नहीं चाहता। लेकिन मीरा एक ऐसी स्त्री है, जिसने हमेशा राजवैभव, सुख-समृध्दि से बढ़कर अपनी कृष्ण-भक्ति को ही माना। मीरा की कृष्ण-भक्ति से और कुल मर्यादा को त्यागने से परेशान सास जब कहती है कि, कृष्ण तो बच्चों के वत्सल हैं, उनकी भक्ति करना संतों का काम है। तू तो राठोड़ परिवार की है। भगवान ने तुझे राज दिया है। अत: तू कृष्ण की भक्ति छोड़ और इस राजवैभव को भोग। यह सुनते ही मीरा का कहना कि -

"राजकरै ज्यानां करणे दीज्यौ, मैं भगतां री दास।
सेवा साधू जनन की, म्हारे राम मिलन की आस।।"[६]

उसकी राजवैभव, सुख-समृध्दि की अपेक्षा सामान्य जीवन जीनेवाले संतों में रहकर कृष्ण की भक्ति करनें की प्रवृत्ति को व्यक्त करता है। यहाँ तक वह नहीं रूकती राजवैभव को ठुकराते हुए वह देवर राणा विक्रमादित्य से कहती है -

"महल किला राणा मोहि न चाहिए,
सारी रेसम पटकी।
हुई दीवानी 'मीरा' डोलै,
केस लटा अब छिटकी।।"[७]

अद्वैतवाद पर बल :-

मीरा की भक्ति भावना पर गहराई से चिंतन किया जाए तो उसकी भक्ति तथा विचारों में अद्वैतवाद का प्रभाव दिखाई देता है। उसने आराध्य के रूप में केवल कृष्ण को ही माना था। हमारे समाज में विविध देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। सभी अपनी-अपनी देवताओं को श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास करते हैं। स्त्रियाँ जहाँ शादी के पहले अपने मायके (नेहर) में एक देवता को पूजती है, वहाँ शादी के बाद ससुरालवालों की देवी-देवताओं को उसे पूजना पड़ता है। लेकिन मीरा ने शादी के पहले ही जिस कृष्ण को अपने आराध्य के रूप में स्वीकारा था शादी के बाद भी उसकी ही भक्ति करने लगी। मीरा की सास जब मीरा को देवी की पूजा करने के लिए कहती है तो उसका विद्रोह के स्वर में यह कहना -

"नहिं हम पूज्यां गोरज्या जी, नहिं पूजां अनदेव।
परम सनेही गोबिदो, थे कांइ जानो म्हांरो भेव।।"[८]

उसके एकेश्वरवाद या अद्वैतवाद पर बल देने को ही व्यक्त करता है। उसने अपने आराध्य को कभी कृष्ण कहा है, कभी राम, तो कभी गोबिंद। उसके अनुसार ईश्वर तो एक ही है।

परदा प्रथा का विरोध :-

मीराबाई ने अपने पदों में से तत्कालीन परदा प्रथा का खुलकर विरोध किया है। तत्कालीन समाज में घर की चार दीवारों में कैद स्त्री को परदा करके ही रहना पड़ता था। लेकिन चार दीवारों के भीतर रहना, घूंघट में चलना मीरा को स्वीकार नहीं था। मीरा ने एक ओर स्त्रियों को मर्यादित जीवन जीने का संदेश दिया है, तो दूसरी ओर उन्हें विषम बंधनों को तोड़ने की सलाह भी दी है। उसने यह सब केवल कहा नहीं अपितु अपने राजभवन की मर्यादाओं को तोड़कर भक्तों की मंडली में जाकर भजन गाया तथा भंडारे में सम्मिलित होकर प्रभु भक्ति में लीन हो गई। उसका अपने देवर राणा से यह कहना -

"राणाजी ! अब न रहूंगी तोरी हटकी।
साथ संग मोंहि प्यारा लागै,
लाज गई घूंघट की।
पीहर मेड़ता छोड़ा आपण,
सुरत-निरत दोऊ चटकी।
सतगुर मुकुर दिखाया घट का,
नाचूंगी दे-दे चुटकी।"[८]

उसके साहसपूर्ण संघर्ष को व्यक्त करता है। मीरा का परदा प्रथा का यह विरोध तत्कालीन समाज में जीने वाली स्त्रियों को एक नई दिशा देनेवाला था।

सती प्रथा का विरोध :-

मीरा के समय का समाज विविध कुप्रथाओं से ग्रस्त था। उन कुप्रथाओं में सती-प्रथा एक क्रूर कुप्रथा थी, जिसमें पति मरने के पश्चात पत्नी को जलती अग्नि में प्रवेश कर सती जाने के लिए विवश किया जाता था। बहुविवाह पध्दति के कारण कई स्त्रियों को इस प्रथा का शिकार होना पड़ता था। मीरा के ससुराल में ही रत्नसिंह की चार पत्नियों में से तीन को सती किया जा चुका था। लेकिन मीरा इस कुप्रथा का विरोध करनेवाली पहली स्त्री है। उसको भी पति भोजराज की मृत्यु के बाद समाज में चल रही इसी कुप्रथा के अनुसार सती होने के लिए विवश किया जाने लगा। लेकिन मीरा को ईश्वर द्वारा प्राप्त इस शरीर को नष्ट करना स्वीकार नहीं था। उन्होंने सती होने से स्पष्ट रूप से नकारा। उन्होंने कहा कि वह तो कृष्ण को अपना पति मानती है। अत: भोजराज की मृत्यु पर वह सती नहीं होगी। वह अपनी सास को स्पष्ट रूप से कहती है -

"सती न होस्यां गिरधर गास्यां, म्हांरा मन मोहो धननामी।
जेंठ बहू को नातो न राणा जी, हूँ सेवक थे स्वामी।।
गिरधर कंथ गिरधर धनि म्हारे, मात पिता वोइ भाई।
थें थाँरे मैं म्हाँरे राणा जी, यूँ कहे मीराबाई।।"[९]

मीरा का यह विद्रोही क्रांतिकारी रूप भारतीय इतिहास में स्त्री समाज के लिए एक प्रकाशपुंज की तरह है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी पूरी शक्ति और भक्ति के बल पर स्त्री संघर्ष की नींव रखनेवाली पहली स्त्री मीरा ही है। भले ही उसने स्त्री आन्दोलन नहीं चलाया हो, लेकिन स्त्री के लिए स्वाधीनता एवं स्वाधिकार के मार्ग को निश्चित ही प्रशस्त किया है। उस समय के समाज में न जाने ऐसी कितनी स्त्रियाँ थी, जो बंद

आँखों से सामाजिक कुप्रथाओं को सहती जा रही थी, वे कभी इसका विरोध तक नहीं कर पाई। ऐसी स्त्रियों के लिए मीरा का यह कुप्रथाओं के प्रति विद्रोह निश्चित ही प्रेरणादायी साबित होता है।

मीरा की कृष्ण भक्ति के बहाने स्त्री विमर्श पर चिंतन करने के पश्चात कुछ निष्कर्ष बिंदु हमारे सामने आते हैं। जैसे -

- अन्य संतों की तरह ईश्वर भक्ति के लिए मीरा ने गुरू ज्ञान को महत्त्वपूर्ण माना है।
- मीरा ने तीर्थ, व्रत, गंगास्नान, योग, वैराग्य आदि को अर्थहीन बताकर समाज को इन बाहरमुखी क्रियाओं में अपना अनमोल जीवन नष्ट न करने की सलाह दी है।
- मीरा के लिए समानाधिकार पाने का माध्यम कृष्ण-भक्ति ही रहा है।
- चमार जाति के सन्त रविदास को अपना गुरू स्वीकार कर मीरा ने एक दृष्टि से जाति-पांति की कुप्रथा का विरोध कर मानवता की स्थापना की है।
- वैभव-विलास को त्यागकर मनुष्य मात्र से प्रेम करना चाहिए यह सीख हमें मीराबाई के चरित्र एवं जीवन से मिलती है।
- स्वाधिकार एवं स्वाधीनता की भावना लेकर जीनेवाली मीरा स्त्री समाज के लिए निश्चित ही एक प्रेरणास्थान है।
- चार दीवारों में कैद होकर घूंघट में रहना-चलना मीरा को स्वीकार नहीं था। अत: वह कुलमर्यादा को त्यागकर साधुओं के बीच कृष्ण के भजन गाती रही।
- सती-प्रथा जैसी कुपरम्परा के शिकंजे में कैद स्त्री को मुक्त करने का मीराबाई का प्रथम प्रयास निश्चित ही सराहनीय, वंदनीय है।

कुल मिलाकर मीरा ने अपनी कृष्ण-भक्ति के साथ-साथ जो समाज सुधार का या स्त्रियों में चेतना जगाने का कार्य किया है वह सराहनीय है। यहाँ हमें यह कहना अनुचित नहीं होगा कि मीरा मेवाड़ की, मरूभूमि की मंदाकिनी है, भक्ति की भागीरथी है, महिलाओं की तो मुकुटमनी है। अपने कर्म से मीराबाई ने राजस्थान के रेगिस्थान में भक्ति की निर्मल धारा बहाकर उस भूमि को वंदनीय बना दिया है। अत: भारत वर्ष के लिए ही नहीं पूरे विश्व के लिए वह आदरणीय है।

संदर्भ सूची :-

१. निशान साहिब - श्री गुरू रविदास दर्शन एवं मीराँ पदावली - पृ.सं. २०००, श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान पब्लिक चैरीटेबल ट्रस्ट, जलन्धर (पंजाब) - पृ.१३८,१३९.
२. राधा स्वामी सत्संग ब्यास - मीरा प्रेम दीवानी - पृ.सं. १९८०, राधा स्वामी सत्संग ब्यास (पंजाब) - पृ. ८५.
३. निशान साहिब - श्री गुरू रविदास दर्शन एवं मीराँ पदावली - पृ.सं. २०००, श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान पब्लिक चैरीटेबल ट्रस्ट, जलन्धर (पंजाब) - पृ.१३९.
४. राधा स्वामी सत्संग ब्यास - मीरा प्रेम दीवानी - पृ.सं. १९८०, राधा स्वामी सत्संग ब्यास (पंजाब) - पृ.१२.
५. संपा. सुदर्शन चोपड़ा - मीरा परिचय तथा रचनाएं - चौथा रिप्रिंट २०१०, हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली - पृ.३५.
६. निशान साहिब - श्री गुरू रविदास दर्शन एवं मीराँ पदावली - पृ.सं. २०००, श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान पब्लिक चैरीटेबल ट्रस्ट, जलन्धर (पंजाब) - पृ. १५०.
७. संपा. सुदर्शन चोपड़ा - मीरा परिचय तथा रचनाएं - चौथा रिप्रिंट २०१०, हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली - पृ. ८७.
८. संपा. सुदर्शन चोपड़ा - मीरा परिचय तथा रचनाएं - चौथा रिप्रिंट २०१०, हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली - पृ. ८७.
९. निशान साहिब - श्री गुरू रविदास दर्शन एवं मीराँ पदावली - पृ.सं. २०००, श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान पब्लिक चैरीटेबल ट्रस्ट, जलन्धर (पंजाब) - पृ. १७३.